International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 49-50

वेदों में मानवता के सूत्र

डॉ0 राज पाल
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग सी0आर0 किसान महाविद्यालय, जीन्द, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

विश्व के साहित्येतिहास में वेद प्राचीनतम हैं। भारतीय ऋषिपरम्परा के अनुसार वेद अपौरुषेय हैं। शतपथ ब्राह्मणकार कहते हैं –

> एवं वा अरे अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितम्।
> एतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वागिरसः।।[1]

अर्थात् ऋग्वेदादि चारों वेद परमात्मा ने इस प्रकार अनायास उत्पन्न कर दिये हैं कि जिस प्रकार शवास–प्रश्वास की क्रिया अनायास होती रहती है। महर्षि मनु ने भी कहा है –

> अग्नि–वायु–रविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्।
> दुदोह यज्ञसिद्धयर्थं ऋग्–यजुः–सामलक्षणम्।।[2]

अर्थात् सनातन वेदों को परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में अग्नि आदि ऋषियों पर प्रकट किया जिससे कि मनुष्यमात्र के सब प्रकार के व्यवहार सिद्ध हो सकें। वेदोऽखिलो धर्ममूलम्। सर्वज्ञानमयो हि सः। मनु के इन प्रमाणों से वेद सभी ज्ञान–विज्ञान के मूल ग्रन्थ हैं। जिस प्रकार परमेश्वर कृत सभी सूर्यादि पदार्थ किसी देश विशेष, जाति विशेष अथवा व्यक्ति विशेष के लिए न होकर प्राणीमात्र के लिये हैं, उसी प्रकार वेद भी ईश्वरकृत होने से मानवमात्र के कल्याण के लिये हैं।
वेद स्वयं कहता है –

> यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
> ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।[3]

इस मंत्र की व्याख्या में महर्षि दयानन्द लिखते हैं – परमेश्वर कहता है कि जैसे मैं सब मनुष्यों के लिए इस कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख को देने वाली ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का उपदेश करता हूँ, वैसे ही तुम भी किया करो। इस प्रकार वेदों के नियम मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए होने के कारण सार्वभौम हैं।
वर्तमान में जब विश्व में मानव समाज पर गम्भीरता से दृष्टिपात किया जाता है तो मानवता का सर्वथा विनाश ही दृष्टिगोचर होता है। मानवता के इस विनाश को देखते हुए आज मानवाधिकार आयोग भी स्थापित किया जा चुका है जो मानवता की रक्षा में तत्पर है। पुनरपि वैदिक दृष्टिकोण के अभाव में वह भी प्रायः निष्फल ही दिखाई देता है। इसका मुख्य कारण है कि आज विश्व में साम्प्रदायिकता अपने चरम पर है। इसाई समाज अन्य मत वालों को इसाई बनाने में यत्नवान् है तो इस्लामी समाज सारे विश्व को एकमात्र मुहम्मद का अनुयायी बनाने का स्वप्न देख रहा है। संसार का एक बड़ा भाग 'बुद्धं शरणं गच्छामि' का नाद गुँजा रहा है। इसी प्रकार सभी मत–मतान्तर अपने–अपने मत के विस्तार करने में कृतसंकल्प हैं। किन्तु कोई भी मतसम्प्रदाय मानव निर्माण की बात नहीं करता अपितु परस्पर के ईर्ष्या–द्वेष के कारण वैश्विक वातावरण में साम्प्रदायिकता का भयंकर विष ही घोल रहे हैं। इस साम्प्रदायिकता ने किस प्रकार मानवता को पद दलित किया है, इसका साक्षी विश्व का इतिहास रहा है।
एकमात्र वेद ही ऐसे हैं जो सृष्टि के आदिकाल से ही 'मनुर्भव' (ऋ. 10.53.6) अर्थात् 'मनुष्य बनो' का उद्घोष कर रहे हैं। वेद की दृष्टि में सम्पूर्ण भूमि हम सबकी माता है। वह कहता है – माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः। (अथर्व. 12.1.12) संसार का प्रत्येक व्यक्ति यदि वेद की इस दृष्टि को अपने सम्मुख रख ले कि हम सबकी माता एक है तो परस्पर सगे भाइयों के समान रहने की बड़ी प्रेरणा मिल सकती है। अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय। (ऋ. 5.60.5) अर्थात् हमें छोटे–बड़े का भेदभाव त्यागकर भ्रातृत्त्व के साथ आगे बढ़ना चाहिये।

पारस्परिक प्रीति–सभी मनुष्य परस्पर प्रीतिपूर्वक रहें और मित्रभाव रखें। इसके लिए वेद कहता है–

> सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः। अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या।।
> येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः। तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः।[4]

अर्थात् हे मनुष्यो! सहृदयता, एकमनस्कता और अविद्वेष का संदेश मैं देता हूँ। एक–दूसरे के साथ तुम इस प्रकार प्रीति रखो जैसे गाय अपने नवजात बछड़े के प्रति प्रीति रखती है। जिससे देव जन एक–दूसरे से अलग नहीं होते, न आपस में द्वेष करते हैं। उस परस्पर मिलकर रहने के गुण को मैं तुम्हारे घरों में सदस्यों के अन्दर उत्पन्न करता हूँ।
वेद परस्पर विरुद्ध बने हुए व्यक्तियों को एकता के सूत्र में आबद्ध करने के लिए प्रेरणा देते हैं –

> सं वो मनांसि सं व्रता समाकूतीर्नमामसि।
> अमी ये विव्रता स्थन तान् वः सं नमयामसि।।[5]

मैं तुम्हारे मनों को, कर्मों को और संकल्पों को परस्पर अनुकूल कर देता हूँ। जो तुम्हारे प्रतिकूल विचार और कर्मों वाले हो गये हों, उन्हें मैं पुनः अनुकूल कर रहा हूँ।

सर्वभूत मैत्री

वेद संदेश देता है कि एक राष्ट को दूसरे राष्ट्र से, एक प्रदेश को दूसरे प्रदेश से, एक संगठन को दूसरे संगठन से शत्रुता नहीं, अपितु मित्रता रखनी चाहिए। उसके शब्द हैं –

> मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
> मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।[6]

सब व्यक्ति मुझे मित्र की दृष्टि से देखें, मैं भी सबको मित्र की दृष्टि से देखूँ, और सभी परस्पर मित्र की दृष्टि से देखा करें।

अपकामन् पौरुषेयाद् वृणानो दैव्यं वचः।
प्रणीतीरभ्यावर्तस्व विश्वेभिः सखिभिः सह।[7]

हे मनुष्य! तू साधारण पुरुषों की भाँति क्रोध भरे वचन मत बोल, उनका त्याग करके दिव्य वचन बोल और अपने साथियों के साथ मित्रता का व्यवहार करे।

उत देवा अविहतं देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चकुषं देवा देवा जीवयथ पुनः।[8]

हे विद्वानो! जो नीचे गिर गया है, उसे तुम ऊपर उठाओ। जो अपराध करने के कारण दुष्फल भोग रहा है, मृतप्रायः हो रहा है, उसे पुनः जीवन प्रदान करो।

राक्षसी वृत्तियों से बचना

मनुष्यों में अज्ञान, स्वार्थ आदि के कारण आई राक्षसी वृत्तियाँ मानवता की विध्वंसक होती हैं। वेद मनुष्य को उनसे बचने का उपदेश देता हुआ कहता है –

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहिश्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्ण्यातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।।[9]

हे मनुष्य! तू उल्लू के आचरण समान मोह को, भेड़िये के चलन समान क्रोध को, कुत्ते के व्यवहार समान मत्सर को, चक्रवाक के आचरण समान काम को, गरुड़ की चाल के समान मद को, गिद्ध के जैसे बर्ताव लोभ को, इस प्रकार नष्ट कर दे जैसे पत्थर से किसी वस्तु को चूर किया जाता है।
प्रत्युष्टं रक्ष प्रत्युष्टा अरातयः। (यजु. 1.7) हे मनुष्य! तू राक्षसी वृत्तियों को दग्ध कर दे, स्वार्थ वृत्तियों को भस्म कर दे।
वेद मनुष्यों को अमानवीय कृत्यों को सहन न करने का उपदेश देता है –

अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तुरन्यव्रतो अमानुषः।
त्वं तस्याऽमित्रहन् वधर्दासस्य दम्भय।।[10]

जो निकम्मे, अविचारशील, पापव्रती, मानवता का ध्यान न रखने वाले दस्यु लोग हैं, उनके अत्याचार को हे शत्रुहन्तो! तू मत पनपने दे, इत्यादि।
इस प्रकार वेद एक सार्वभौम मानव धर्म का प्रतिपादन करते हैं जो आज की परिस्थितियों में और अधिक प्रासंगिक हो गया है।

संदर्भ सूची

1. शतपथब्राह्मण, 14/5/4/10
2. मनुस्मृति, 1/23
3. यजुर्वेद 26/2
4. अथर्ववेद 3.20.1.4
5. वही 6.94.1
6. यजुर्वेद 36.18
7. अथर्ववेद 7.105.1
8. वही 4.13.1
9. वही 8.4.22
10. ऋग्वेद 10.22.8